



13 Oct 2025

03:57 PM

Davangere

Model: Web-KundliPhal

Order No: 120086501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 13/10/2025
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 15:57:00 घंटे
इष्ट _____: 24:08:11 घटी
स्थान _____: Davangere
राज्य _____: Karnataka
देश _____: India

अक्षांश _____: 14:30:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:52:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:26:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 15:30:28 घंटे
वेलान्तर _____: 00:13:47 घंटे
साम्पातिक काल _____: 16:59:25 घंटे
सूर्योदय _____: 06:17:43 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:07:41 घंटे
दिनमान _____: 11:49:58 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 26:07:32 कन्या
लग्न के अंश _____: 17:19:30 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी _____: मिथुन - बुध
नक्षत्र-चरण _____: पुनर्वसु - 1
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: शिव
करण _____: बालव
गण _____: देव
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: के-केवल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	आश्विन	21
पंजाबी	संवत : 2082	आश्विन	28
बंगाली	सन् : 1432	आश्विन	26
तमिल	संवत : 2082	पुरुटासी	27
केरल	कोल्लम : 1201	कन्नी	27
नेपाली	संवत : 2082	आश्विन	27
चैत्रादि	संवत : 2082	कार्तिक	कृष्ण 7
कार्तिकादि	संवत : 2082	आश्विन	कृष्ण 7

पंचांग

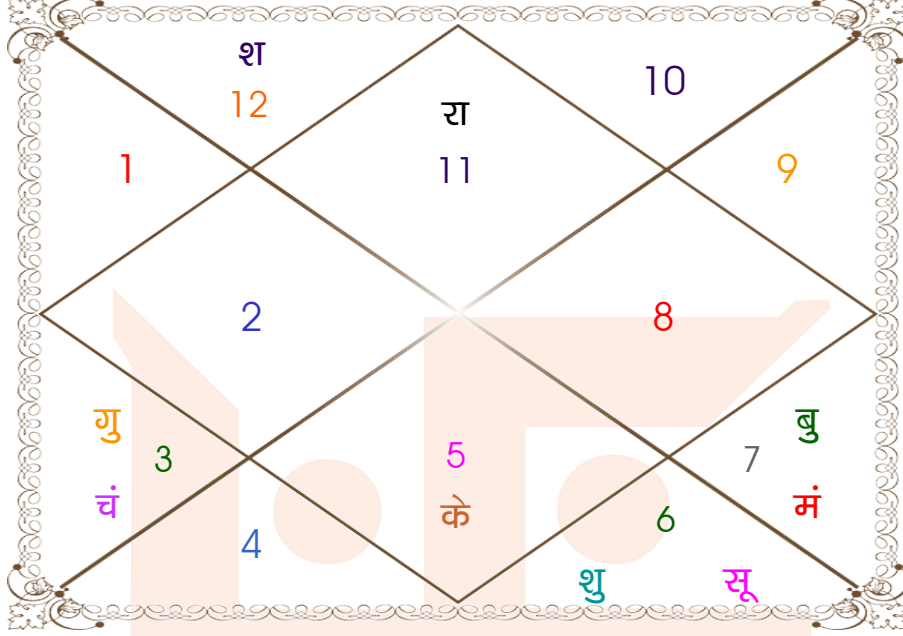
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 7
 तिथि समाप्ति काल _____ : 12:24:39
 जन्म तिथि _____ : 8
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : आर्द्रा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 12:26:47 घंटे
 जन्म योग _____ : पुनर्वसु
 सूर्योदय कालीन योग _____ : परिघ
 योग समाप्ति काल _____ : 08:10:05 घंटे
 जन्म योग _____ : शिव
 सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
 करण समाप्ति काल _____ : 12:24:39 घंटे
 जन्म करण _____ : बालव
 भयात _____ : 08:45:34
 भभोग _____ : 58:38:42
 भोग्य दशा काल _____ : गुरु 13 वर्ष 6 मा 30 दि

घात चक्र

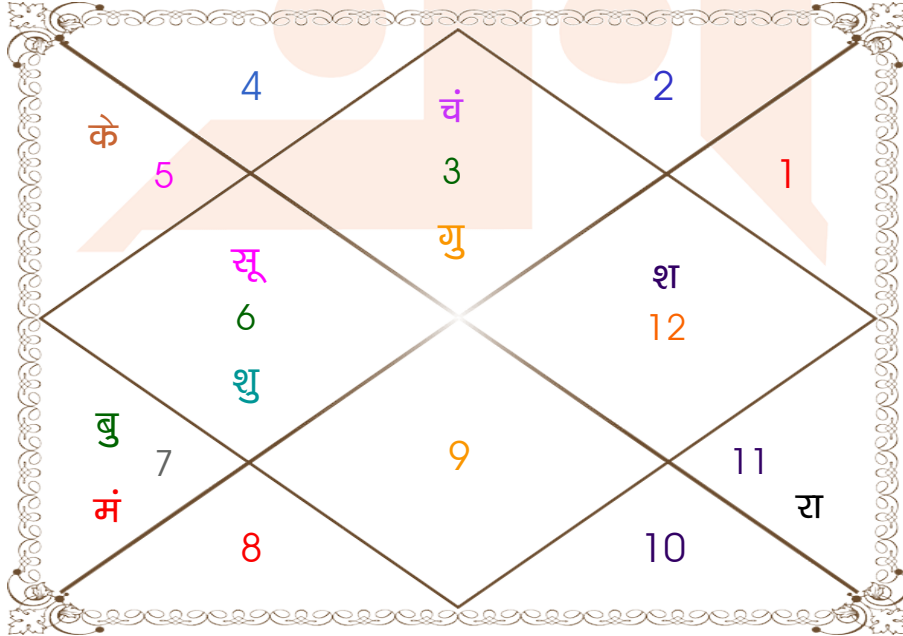
मास _____ : आषाढ़
 तिथि _____ : 2-7-12
 दिन _____ : सोमवार
 नक्षत्र _____ : स्वाति
 योग _____ : परिघ
 करण _____ : कौलव
 प्रहर _____ : 3
 वर्ग _____ : मूषक
 लग्न _____ : कर्क
 सूर्य _____ : मीन
 चन्द्र _____ : कुम्भ
 मंगल _____ : मेष
 बुध _____ : मकर
 गुरु _____ : वृष
 शुक्र _____ : मिथुन
 शनि _____ : कुम्भ
 राहु _____ : कर्क

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

श			चं गु
रा ल			
			के
		बु मं	शु सू

लग्न कुण्डली

गु चं		श
		रा ल
के		
सू शु	मं बु	

विंशोत्तरी
गुरु 13वर्ष 6मा 30दि
गुरु

13/10/2025

15/05/2143

गुरु	14/05/2039
शनि	14/05/2058
बुध	14/05/2075
केतु	14/05/2082
शुक्र	15/05/2102
सूर्य	14/05/2108
चन्द्र	15/05/2118
मंगल	15/05/2125
राहु	15/05/2143

योगिनी
पिंगला 1वर्ष 8मा 11दि
पिंगला

13/10/2025

25/06/2027

	00/00/0000
	13/10/2025
भामरी	24/12/2025
भद्रिका	05/04/2026
उल्का	05/08/2026
सिद्धा	25/12/2026
संकटा	05/06/2027
मंगला	25/06/2027



FUTUREPOINT
Astro Solutions



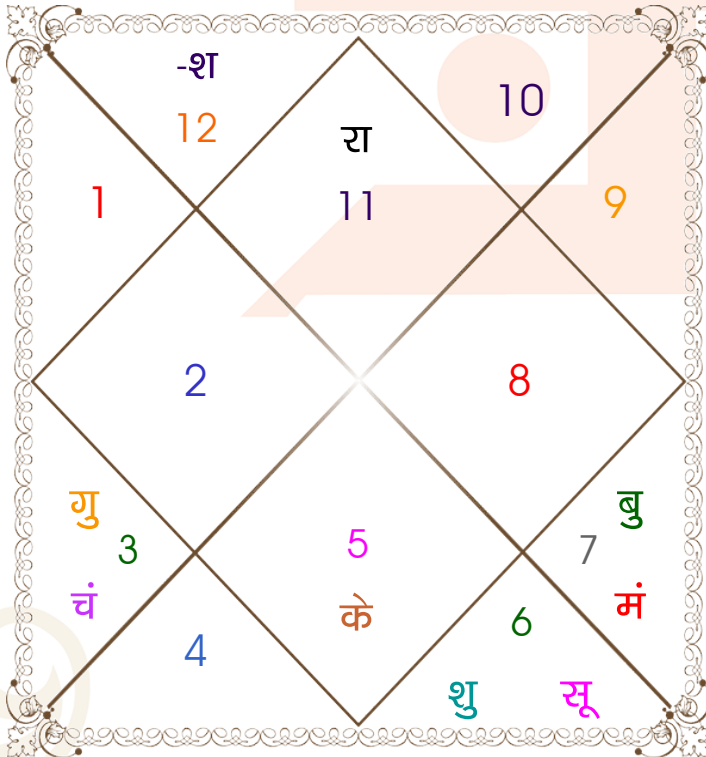
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	17:19:30	433:56:52	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	शुक्र	---
सूर्य			कन्या	26:07:32	00:59:24	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	गुरु	सम राशि
चंद्र			मिथु	22:00:52	13:46:17	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	मित्र राशि
मंगल			तुला	20:11:32	00:41:37	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	सम राशि
बुध			तुला	15:38:34	01:24:58	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	मित्र राशि
गुरु			मिथु	29:34:15	00:05:26	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	चंद्र	शत्रु राशि
शुक्र			कन्या	05:13:14	01:14:26	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	नीच राशि
शनि	व		मीन	02:38:37	00:04:03	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
राहु	व		कुंभ	23:41:16	00:00:27	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	शनि	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	23:41:16	00:00:27	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	06:41:12	00:01:43	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	बुध	---
नेप	व		मीन	06:00:07	00:01:32	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो	व		मक	07:08:56	00:00:01	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
दशम भाव			वृश्चि	21:50:11	--	ज्येष्ठा	--	18	मंगल	बुध	सूर्य	--

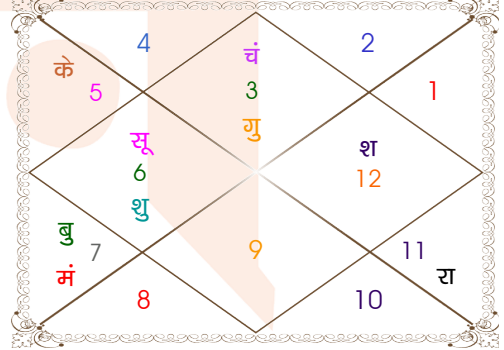
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:05

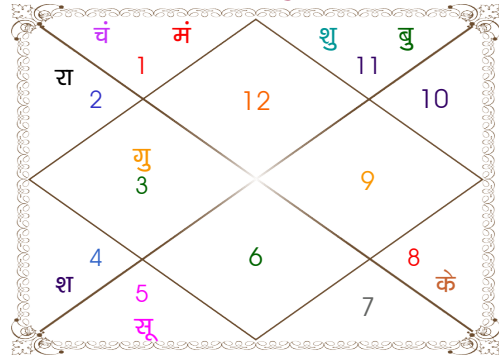
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 03:04:37	कुम्भ 17:19:30
2	मीन 03:04:37	मीन 18:49:44
3	मेष 04:34:51	मेष 20:19:57
4	वृष 06:05:04	वृष 21:50:11
5	मिथुन 06:05:04	मिथुन 20:19:57
6	कर्क 04:34:51	कर्क 18:49:44
7	सिंह 03:04:37	सिंह 17:19:30
8	कन्या 03:04:37	कन्या 18:49:44
9	तुला 04:34:51	तुला 20:19:57
10	वृश्चिक 06:05:04	वृश्चिक 21:50:11
11	धनु 06:05:04	धनु 20:19:57
12	मकर 04:34:51	मकर 18:49:44

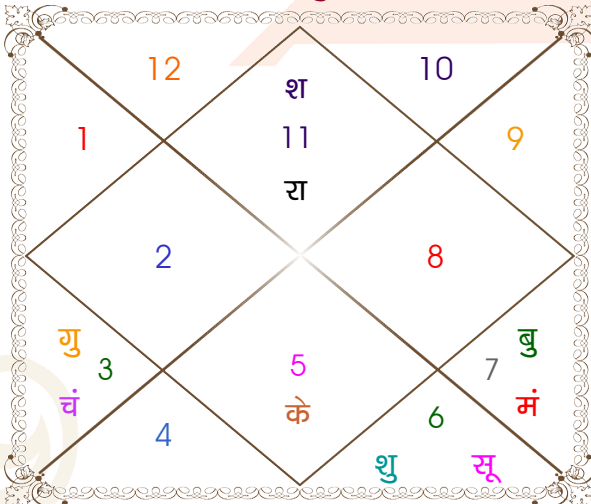
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	17:19:30
2	मीन	23:10:49
3	मेष	24:38:46
4	वृष	21:50:11
5	मिथुन	17:31:20
6	कर्क	14:59:54
7	सिंह	17:19:30
8	कन्या	23:10:49
9	तुला	24:38:46
10	वृश्चिक	21:50:11
11	धनु	17:31:20
12	मकर	14:59:54

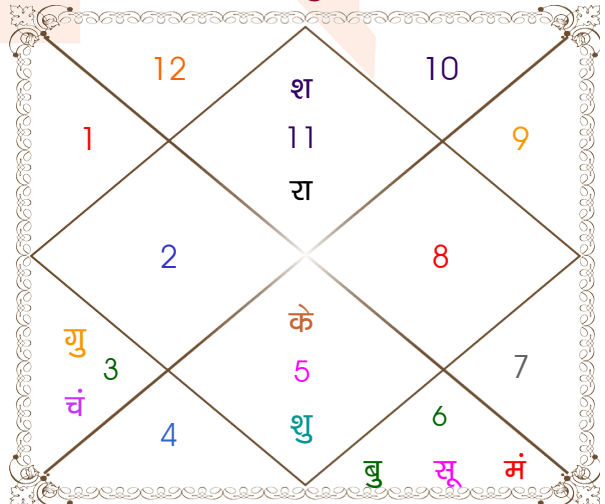
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



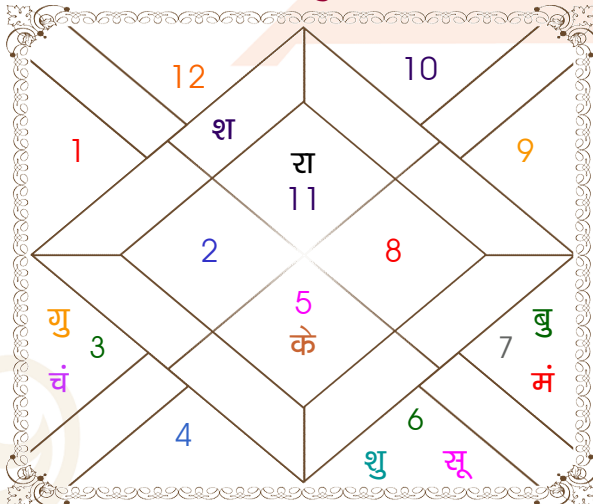
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	बाल निपीदित नृत्यलिप्सा 0.92 49 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	वृद्ध मुदित आगम 6.55 62 %
मंगल	मातृ	भ्रातृ	वृद्ध शान्त आगमन 2.74 5 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	युवा मुदित आगमन 5.53 32 %
गुरु	आत्मा	धन	मृत खल भोजन 2.72 55 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	मृत भीत आगमन 1.29 61 %
शनि	कलत्र	आयु	मृत शान्त शयन 1.58 14 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध मुदित नृत्यलिप्सा 0.00 59 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध खल आगमन 0.00 59 %
कुल			21.33

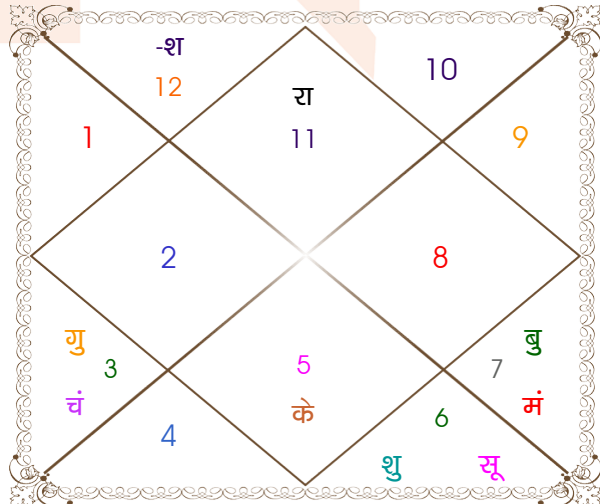
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली



लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 13 वर्ष 6 मास 30 दिन

गुरु 16 वर्ष 13/10/2025 14/05/2039	शनि 19 वर्ष 14/05/2039 14/05/2058	बुध 17 वर्ष 14/05/2058 14/05/2075	केतु 7 वर्ष 14/05/2075 14/05/2082	शुक्र 20 वर्ष 14/05/2082 15/05/2102
13/10/2025	शनि 17/05/2042	बुध 10/10/2060	केतु 10/10/2075	शुक्र 12/09/2085
शनि 13/01/2028	बुध 24/01/2045	केतु 07/10/2061	शुक्र 09/12/2076	सूर्य 13/09/2086
बुध 20/04/2030	केतु 05/03/2046	शुक्र 07/08/2064	सूर्य 16/04/2077	चंद्र 13/05/2088
केतु 27/03/2031	शुक्र 05/05/2049	सूर्य 13/06/2065	चंद्र 15/11/2077	मंगल 14/07/2089
शुक्र 25/11/2033	सूर्य 17/04/2050	चंद्र 13/11/2066	मंगल 14/04/2078	राहु 13/07/2092
सूर्य 13/09/2034	चंद्र 16/11/2051	मंगल 10/11/2067	राहु 02/05/2079	गुरु 14/03/2095
चंद्र 13/01/2036	मंगल 25/12/2052	राहु 29/05/2070	गुरु 07/04/2080	शनि 14/05/2098
मंगल 19/12/2036	राहु 01/11/2055	गुरु 03/09/2072	शनि 17/05/2081	बुध 15/03/2101
राहु 14/05/2039	गुरु 14/05/2058	शनि 14/05/2075	बुध 14/05/2082	केतु 15/05/2102
सूर्य 6 वर्ष 15/05/2102 14/05/2108	चंद्र 10 वर्ष 14/05/2108 15/05/2118	मंगल 7 वर्ष 15/05/2118 15/05/2125	राहु 18 वर्ष 15/05/2125 15/05/2143	गुरु 16 वर्ष 15/05/2143 00/00/0000
सूर्य 02/09/2102	चंद्र 15/03/2109	मंगल 11/10/2118	राहु 26/01/2128	गुरु 02/07/2145
चंद्र 03/03/2103	मंगल 14/10/2109	राहु 30/10/2119	गुरु 20/06/2130	शनि 14/10/2145
मंगल 09/07/2103	राहु 15/04/2111	गुरु 05/10/2120	शनि 26/04/2133	00/00/0000
राहु 02/06/2104	गुरु 14/08/2112	शनि 13/11/2121	बुध 14/11/2135	00/00/0000
गुरु 21/03/2105	शनि 15/03/2114	बुध 11/11/2122	केतु 01/12/2136	00/00/0000
शनि 03/03/2106	बुध 15/08/2115	केतु 09/04/2123	शुक्र 02/12/2139	00/00/0000
बुध 07/01/2107	केतु 15/03/2116	शुक्र 08/06/2124	सूर्य 26/10/2140	00/00/0000
केतु 15/05/2107	शुक्र 13/11/2117	सूर्य 14/10/2124	चंद्र 27/04/2142	00/00/0000
शुक्र 14/05/2108	सूर्य 15/05/2118	चंद्र 15/05/2125	मंगल 15/05/2143	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 13 वर्ष 7 मा 10 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि 13/10/2025 13/01/2028	गुरु - बुध 13/01/2028 20/04/2030	गुरु - केतु 20/04/2030 27/03/2031	गुरु - शुक्र 27/03/2031 25/11/2033	गुरु - सूर्य 25/11/2033 13/09/2034
शनि 25/11/2025 बुध 05/04/2026 केतु 29/05/2026 शुक्र 30/10/2026 सूर्य 15/12/2026 चंद्र 03/03/2027 मंगल 26/04/2027 राहु 11/09/2027 गुरु 13/01/2028	बुध 09/05/2028 केतु 26/06/2028 शुक्र 11/11/2028 सूर्य 23/12/2028 चंद्र 02/03/2029 मंगल 19/04/2029 राहु 21/08/2029 गुरु 10/12/2029 शनि 20/04/2030	केतु 09/05/2030 शुक्र 05/07/2030 सूर्य 22/07/2030 चंद्र 20/08/2030 मंगल 09/09/2030 राहु 30/10/2030 गुरु 14/12/2030 शनि 06/02/2031 बुध 27/03/2031	शुक्र 05/09/2031 सूर्य 24/10/2031 चंद्र 13/01/2032 मंगल 10/03/2032 राहु 03/08/2032 गुरु 10/12/2032 शनि 14/05/2033 बुध 29/09/2033 केतु 25/11/2033	सूर्य 09/12/2033 चंद्र 02/01/2034 मंगल 20/01/2034 राहु 04/03/2034 गुरु 12/04/2034 शनि 29/05/2034 बुध 09/07/2034 केतु 26/07/2034 शुक्र 13/09/2034
गुरु - चंद्र 13/09/2034 13/01/2036	गुरु - मंगल 13/01/2036 19/12/2036	गुरु - राहु 19/12/2036 14/05/2039	शनि - शनि 14/05/2039 17/05/2042	शनि - बुध 17/05/2042 24/01/2045
चंद्र 23/10/2034 मंगल 21/11/2034 राहु 02/02/2035 गुरु 08/04/2035 शनि 24/06/2035 बुध 01/09/2035 केतु 29/09/2035 शुक्र 19/12/2035 सूर्य 13/01/2036	मंगल 02/02/2036 राहु 24/03/2036 गुरु 08/05/2036 शनि 01/07/2036 बुध 18/08/2036 केतु 07/09/2036 शुक्र 03/11/2036 सूर्य 20/11/2036 चंद्र 19/12/2036	राहु 29/04/2037 गुरु 24/08/2037 शनि 10/01/2038 बुध 14/05/2038 केतु 04/07/2038 शुक्र 27/11/2038 सूर्य 10/01/2039 चंद्र 24/03/2039 मंगल 14/05/2039	शनि 04/11/2039 बुध 08/04/2040 केतु 11/06/2040 शुक्र 11/12/2040 सूर्य 04/02/2041 चंद्र 07/05/2041 मंगल 10/07/2041 राहु 21/12/2041 गुरु 17/05/2042	बुध 03/10/2042 केतु 30/11/2042 शुक्र 12/05/2043 सूर्य 01/07/2043 चंद्र 21/09/2043 मंगल 17/11/2043 राहु 12/04/2044 गुरु 21/08/2044 शनि 24/01/2045
शनि - केतु 24/01/2045 05/03/2046	शनि - शुक्र 05/03/2046 05/05/2049	शनि - सूर्य 05/05/2049 17/04/2050	शनि - चंद्र 17/04/2050 16/11/2051	शनि - मंगल 16/11/2051 25/12/2052
केतु 17/02/2045 शुक्र 25/04/2045 सूर्य 15/05/2045 चंद्र 18/06/2045 मंगल 12/07/2045 राहु 11/09/2045 गुरु 04/11/2045 शनि 07/01/2046 बुध 05/03/2046	शुक्र 14/09/2046 सूर्य 11/11/2046 चंद्र 15/02/2047 मंगल 23/04/2047 राहु 14/10/2047 गुरु 16/03/2048 शनि 15/09/2048 बुध 26/02/2049 केतु 05/05/2049	सूर्य 22/05/2049 चंद्र 20/06/2049 मंगल 10/07/2049 राहु 31/08/2049 गुरु 16/10/2049 शनि 10/12/2049 बुध 28/01/2050 केतु 18/02/2050 शुक्र 17/04/2050	चंद्र 04/06/2050 मंगल 07/07/2050 राहु 02/10/2050 गुरु 18/12/2050 शनि 20/03/2051 बुध 10/06/2051 केतु 14/07/2051 शुक्र 18/10/2051 सूर्य 16/11/2051	मंगल 09/12/2051 राहु 08/02/2052 गुरु 02/04/2052 शनि 05/06/2052 बुध 02/08/2052 केतु 25/08/2052 शुक्र 01/11/2052 सूर्य 21/11/2052 चंद्र 25/12/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु 25/12/2052 01/11/2055	शनि - गुरु 01/11/2055 14/05/2058	बुध - बुध 14/05/2058 10/10/2060	बुध - केतु 10/10/2060 07/10/2061	बुध - शुक्र 07/10/2061 07/08/2064
राहु 30/05/2053 गुरु 16/10/2053 शनि 29/03/2054 बुध 24/08/2054 केतु 24/10/2054 शुक्र 15/04/2055 सूर्य 06/06/2055 चंद्र 01/09/2055 मंगल 01/11/2055	गुरु 03/03/2056 शनि 28/07/2056 बुध 06/12/2056 केतु 29/01/2057 शुक्र 02/07/2057 सूर्य 17/08/2057 चंद्र 02/11/2057 मंगल 26/12/2057 राहु 14/05/2058	बुध 16/09/2058 केतु 06/11/2058 शुक्र 01/04/2059 सूर्य 15/05/2059 चंद्र 28/07/2059 मंगल 17/09/2059 राहु 27/01/2060 गुरु 23/05/2060 शनि 10/10/2060	केतु 31/10/2060 शुक्र 30/12/2060 सूर्य 17/01/2061 चंद्र 16/02/2061 मंगल 10/03/2061 राहु 03/05/2061 गुरु 20/06/2061 शनि 16/08/2061 बुध 07/10/2061	शुक्र 28/03/2062 सूर्य 19/05/2062 चंद्र 13/08/2062 मंगल 13/10/2062 राहु 17/03/2063 गुरु 02/08/2063 शनि 13/01/2064 बुध 07/06/2064 केतु 07/08/2064
बुध - सूर्य 07/08/2064 13/06/2065	बुध - चंद्र 13/06/2065 13/11/2066	बुध - मंगल 13/11/2066 10/11/2067	बुध - राहु 10/11/2067 29/05/2070	बुध - गुरु 29/05/2070 03/09/2072
सूर्य 22/08/2064 चंद्र 17/09/2064 मंगल 05/10/2064 राहु 21/11/2064 गुरु 01/01/2065 शनि 19/02/2065 बुध 04/04/2065 केतु 22/04/2065 शुक्र 13/06/2065	चंद्र 26/07/2065 मंगल 25/08/2065 राहु 11/11/2065 गुरु 19/01/2066 शनि 11/04/2066 बुध 23/06/2066 केतु 23/07/2066 शुक्र 18/10/2066 सूर्य 13/11/2066	मंगल 04/12/2066 राहु 27/01/2067 गुरु 16/03/2067 शनि 13/05/2067 बुध 03/07/2067 केतु 24/07/2067 शुक्र 22/09/2067 सूर्य 11/10/2067 चंद्र 10/11/2067	राहु 28/03/2068 गुरु 31/07/2068 शनि 25/12/2068 बुध 06/05/2069 केतु 29/06/2069 शुक्र 02/12/2069 सूर्य 17/01/2070 चंद्र 05/04/2070 मंगल 29/05/2070	गुरु 17/09/2070 शनि 26/01/2071 बुध 23/05/2071 केतु 10/07/2071 शुक्र 25/11/2071 सूर्य 06/01/2072 चंद्र 15/03/2072 मंगल 02/05/2072 राहु 03/09/2072
बुध - शनि 03/09/2072 14/05/2075	केतु - केतु 14/05/2075 10/10/2075	केतु - शुक्र 10/10/2075 09/12/2076	केतु - सूर्य 09/12/2076 16/04/2077	केतु - चंद्र 16/04/2077 15/11/2077
शनि 06/02/2073 बुध 25/06/2073 केतु 21/08/2073 शुक्र 01/02/2074 सूर्य 22/03/2074 चंद्र 12/06/2074 मंगल 09/08/2074 राहु 03/01/2075 गुरु 14/05/2075	केतु 23/05/2075 शुक्र 17/06/2075 सूर्य 24/06/2075 चंद्र 07/07/2075 मंगल 15/07/2075 राहु 07/08/2075 गुरु 27/08/2075 शनि 19/09/2075 बुध 10/10/2075	शुक्र 20/12/2075 सूर्य 11/01/2076 चंद्र 15/02/2076 मंगल 11/03/2076 राहु 14/05/2076 गुरु 10/07/2076 शनि 15/09/2076 बुध 15/11/2076 केतु 09/12/2076	सूर्य 16/12/2076 चंद्र 27/12/2076 मंगल 03/01/2077 राहु 22/01/2077 गुरु 08/02/2077 शनि 28/02/2077 बुध 19/03/2077 केतु 26/03/2077 शुक्र 16/04/2077	चंद्र 04/05/2077 मंगल 16/05/2077 राहु 17/06/2077 गुरु 16/07/2077 शनि 19/08/2077 बुध 18/09/2077 केतु 30/09/2077 शुक्र 05/11/2077 सूर्य 15/11/2077

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 4, 6, 5
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल



FUTUREPOINT
Astro Solutions

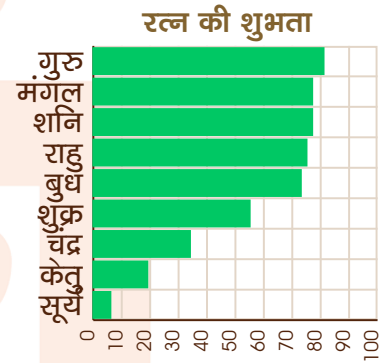


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	81%	सन्तति सुख, धनार्जन, धन
मूंगा	मंगल	77%	भाग्योदय, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	77%	धन, कम खर्च, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	75%	स्वास्थ्य, धन
पन्ना	बुध	73%	भाग्योदय, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
हीरा	शुक्र	55%	दुर्घटना से बचाव, सुख, भाग्योदय
मोती	चंद्र	34%	सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	19%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
माणिक्य	सूर्य	6%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	14/05/2039	19%	47%	83%	61%	94%	34%	77%	75%	19%
शनि	14/05/2058	0%	9%	64%	80%	81%	61%	89%	81%	0%
बुध	14/05/2075	19%	9%	77%	86%	81%	61%	77%	75%	19%
केतु	14/05/2082	0%	9%	83%	73%	81%	61%	64%	62%	44%
शुक्र	15/05/2102	0%	9%	77%	80%	81%	67%	83%	81%	31%
सूर्य	14/05/2108	31%	47%	83%	73%	88%	34%	64%	62%	0%
चंद्र	15/05/2118	19%	55%	77%	80%	81%	55%	77%	62%	0%
मंगल	15/05/2125	19%	47%	89%	61%	88%	55%	77%	62%	31%
राहु	15/05/2143	0%	9%	64%	73%	81%	61%	83%	88%	0%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पुखराज, मूंगा, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पुखराज, मूंगा व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परीक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

लहसुनिया व माणिक्य रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु पंचम भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण आपमें दयालुता और विनम्रता के गुण व्याप्त करेगा। आपकी गिनती बुद्धिमान, पवित्र और श्रेष्ठ व्यक्तियों में होंगी। इस रत्न की शक्तियों से आप चतुर, समझदार और महान कार्य करने वाले बनेंगे। यह रत्न आपके लिए शुभ रत्न है। इसके प्रभाव से आप उत्तम वक्ता, धारा प्रवाह बोलने वाले और कुशल व्याख्याता होंगे। आपकी कल्पनाशक्ति उत्तम होगी। पुखराज रत्न आपको संघर्षों से मुंह न मोड़कर विपत्तियों से जूझते रहने की विशेषज्ञता देगा। आपकी न्यायशीलता में वृद्धि होगी।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में गुरु द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर सकते हैं। पुखराज रत्न की शुभता से आपके धन, लाभ व उन्नति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपके बड़ी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी एवं शुभ चिन्तक भी प्राप्त हो सकते हैं। रत्न प्रभाव आपको उत्तम आय वाला, शूर, निरोगी, स्वस्थ, धनी, दीर्घायु, स्थिर संपत्ति वाला तथा अनेक आयामों से सौभाग्यशाली कर सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं दशमेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर सकते हैं। यह मूंगा सेवकों एवं सहोदरों से आपके संबंध मजबूत कर सकता है। रत्न शुभता से आपको कंप्यूटर तकनीक एवं इंजीनियरिंग क्षेत्र में शुभ फल प्रदान कर सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए आजीविका क्षेत्र का रत्न है। अतः इस रत्न को धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप यह रत्न धारण कर अपनी नेतृत्व योग्यता, प्रभुता, व्यापार, अधिकार, राज्य एवं साहस भाव में वृद्धि कर शुभ फल प्राप्त कर सकते हैं।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आपको शनि का रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धनी, कुटुंब तथा लाभवान बनायेगा। आपके पास धनागमन का प्रवाह बना रहेगा। नीलम रत्न आपको सुख संपदा, समृद्धि, मान-प्रतिष्ठा तथा धन की प्राप्ति देगा। यह रत्न आपके पारिवारिक व्यवसाय के लिए भी सुखद फलदायक होगा। यह आपको लघु उद्योग व शिक्षा आदि के क्षेत्रों में भी सफलता देगा। नीलम रत्न पैतृक सम्पत्ति की वृद्धि करेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वादशेश है। शनि की शुभता में वृद्धि करने के लिए आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न शनि का रत्न होने के कारण आपको निरोगी, स्वस्थ और शारीरिक कुशलता दे सकता है। इस रत्न को आप अपने जीवन रत्न के रूप में भी धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न की शुभता से आपके व्यर्थ व्यय नियंत्रित रहेंगे। अस्पताल व जेल इत्यादि क्षेत्रों से आपको परेशानी अधिक नहीं होगी। शनि रत्न नीलम का प्रभाव आपकी निद्रा सुख को भी बढ़ाएगा। समुद्रिक यात्रा, विदेश यात्रा का सुख भी यह रत्न आपको दे सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय

नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्ति होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे हैं जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी शनि दूसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध नवम भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्मात्मा और

भाग्यशाली बनाएगा। रत्न की शुभता से आप सदाचारी, धर्म को जानने वाले और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको अपने धर्म भाव पर अडिग रखेगा। पन्ना रत्न तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यों जैसे यज्ञ आदि में आपकी अच्छी रुचि बनाएगा। बुद्धि प्रयोग से आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। यह रत्न ज्ञान, धन और यश से उज्ज्वल बनाएगा। बुध रत्न पन्ना आपके ज्ञान और बुद्धि को बढ़ायेगा। यह रत्न आपको वक्ता, संगीतज्ञ, संपादक, लेखक या ज्योतिषी बनने के गुण दे सकता है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते हैं। बुध रत्न पन्ना धारण कर आप शिक्षा क्षेत्र में योग्यता से अधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं। रत्न शुभता से आपके बुद्धिबल का विकास हो सकता है। आप की स्मरण शक्ति प्रबल हो सकती है। यह रत्न आपकी विद्या ग्रहण शक्ति का विकास कर सकता है। बुध रत्न आपके लिए शुभ रत्न है तथा इसकी शुभता से आपके संतान सुख में भी वृद्धि होगी। पन्ना रत्न आपके आत्मविश्वास को प्रबल, प्रबंध क्षमता उत्तम, गणितीय योग्यता उत्तम, नियोजन कुशलता श्रेष्ठ रख सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। शुक्र रत्न हीरा आपको निडर और प्रसन्नचित्त बनायेगा। रत्न शुभता से आप विद्वान्, मनस्वी, धर्मात्मा और सदाचारी बनेंगे। रत्न शुभता आपको शारीरिक, आर्थिक अथवा ग्रहस्थ सुख देगी। आपको किसी स्त्री के माध्यम से धन की प्राप्ति हो सकती है। हीरा रत्न आपको किसी ट्रस्ट के माध्यम से धनलाभ करा सकता है। आपको विदेश यात्रा करने के अवसर प्राप्त होंगे। सेवकों और वाहनों से प्राप्त सुख में बढ़ोतरी होगी। हीरा शेयर बाजार में विनियोजन से लाभ देगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं नवमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। शुक्र रत्न आपको सुख-सुविधा युक्त वाहन, साज सज्जा युक्त घर एवं भूमि-भवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। इसकी शुभता से आप संचित धन एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्ति में अनुकूल फल दिला सकता है। हीरा रत्न शुक्र का रत्न होने के कारण

आपको आकर्षक बना सकता है। शुक्र रत्न हीरा आपको धर्म मार्ग से जोड़ेगा, पुण्य, भाग्यवर्धक, गुरु, तीर्थ यात्रा, पिता का सुख एवं दूर स्थानों की यात्राएं करा सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र पंचम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने से आप स्वभाव से चिड़चिड़ा हो सकता है। यह रत्न आपकी शिक्षा में अनियमिता का कारण बन सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी रुचि शेयर क्रय-विक्रय में हो सकती है। यह रत्न संतान पक्ष से आपकी परेशानियां बढ़ा सकता है। इसके प्रभाव से आपके दैनिक क्रियाकलापों में संतान का दिशानिर्देश सामान्य से अधिक हो सकता है। गुप्त विद्याओं की ओर आप आकर्षित हो सकते हैं। मोती धारण करने पर आपको अपना शैक्षिक स्थल बार बार बदलना पड़ सकता है। मोती रत्न के दुष्प्रभाव से बचने के लिए आप तली हुई चीजों के प्रयोग में कमी करें। संतुष्टि बनाए रखने से आपमें प्रसन्नता का भाव बना रहेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती आपको शारीरिक रूप से कमजोर कर सकता है। इस रत्न प्रभाव से आपका रुग्ण शरीर व शीत विकारयुक्त हो सकता है। मोती रत्न आपको भय व चिंताग्रस्त कर सकता है। छठे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण मोती आपको शत्रुओं पर संघर्ष के बाद विजय देगा। कभी कभी आप अपने शत्रुओं को कमजोर समझकर पूर्ण शक्ति से विरोध नहीं करते हैं। रत्न धारण से आपको ननिहाल पक्ष से हानि की स्थिति बन सकती है। साथ ही यह रत्न आपको जीवन साथी से वैचारिक मतभेद दे सकता है। चंद्र रत्न मोती पहनने पर आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपका व्यापारिक क्षेत्र में धन अधिक खर्च हो सकता है। कई बार आपका धन नष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको

आर्थिक चिंताएं दे सकता है। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आपके द्वारा पिता का संचित धन भी नष्ट हो सकता है। यह रत्न वैवाहिक सुख कम कर सकता है। मित्रों से आपको कष्ट दिला सकता है। रत्न धारण करने के बाद यात्राएं कष्टकारी या असफल हो सकती हैं। केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपको शत्रुओं का भय हो सकता है। मित्रों से कष्ट मिल सकते हैं। कुसंगति के मित्र मिल सकते हैं। साथ ही यह रत्न वैवाहिक सुख में भी कमी कर सकता है।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य आठवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरुसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य पहनने पर आपको समय समय पर सरकारी क्षेत्रों में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। पिता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपको पित्त संबंधी रोग हो सकते हैं। हृदय रोग भी यह रत्न आपको दे सकता है। यह रत्न आपकी धैर्य शक्ति में कमी कर क्रोध भाव में वृद्धि कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप पर कार्य भार बढ़ सकता है। आपको आंखों से संबंधित रोग परेशान कर सकते हैं। पिता से संबंध मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में सूर्य सप्तम भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपके शारीरिक सौंदर्य में न्यूनता आ सकती है। यह रत्न आपके तेजस्विता में भी कमी करेगा। माणिक्य रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनावपूर्ण बना सकता है। रत्न प्रभाव से आपका जीवन साथी कठोर, क्रोधी एवं अहंकार भाव से युक्त हो सकता है। माणिक्य रत्न प्रभाव से आप का स्वभाव भी कुछ उग्रता लिए हुए हो सकता है। माणिक्य रत्न पहनने पर आपको सरकारी टेंडर प्राप्त करने और सरकारी क्षेत्रों के साथ मिलकर कार्य करने में कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने पर साझेदारी व्यवसाय में आपकी शक्तियों में कमी हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु

(13/10/2025 - 14/05/2039)

गुरु की दशा में आपका पुखराज, मूंगा, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व हीरा रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(14/05/2039 - 14/05/2058)

शनि की दशा में आपका नीलम, पुखराज, गोमेद व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(14/05/2058 - 14/05/2075)

बुध की दशा में आपका पन्ना, पुखराज, मूंगा, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, लहसुनिया व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(14/05/2075 - 14/05/2082)

केतु की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, नीलम, गोमेद व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(14/05/2082 - 15/05/2102)

शुक्र की दशा में आपका नीलम, पुखराज, गोमेद, पन्ना व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(15/05/2102 - 14/05/2108)

सूर्य की दशा में आपका पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, नीलम व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, हीरा व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(14/05/2108 - 15/05/2118)

चन्द्र की दशा में आपका पुखराज, पन्ना, मूंगा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मोती व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(15/05/2118 - 15/05/2125)

मंगल की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ

रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

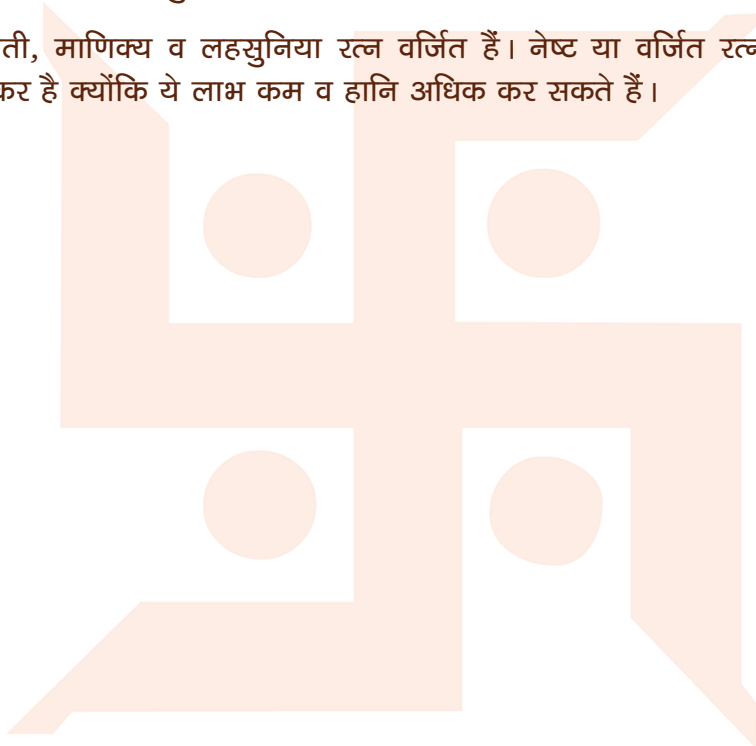
मोती व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(15/05/2125 - 15/05/2143)

राहु की दशा में आपका गोमेद, नीलम व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मूंगा व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ऐमेथिस्ट

आपका जन्म कुंभ राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि इसको न्याय के साथसजा देने का अधिकार प्राप्त है तथा न्यायप्रिय ग्रह माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कुंभ राशि के लग्न वाले जातकों को कुंभ राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये ऐमेथिस्ट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे तो शनि को सेवक का पद प्राप्त है तथा एकाग्रचित व साधना का प्रतिनिधि ग्रह है इससे जातक को अच्छी नौकरी की प्राप्ति, लाभ व विद्यार्थियों को एकाग्रता प्रदान करता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सेवकों का सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है। शनि ग्रह राजसेवक का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों के दर्द व लाइलाज रोगों से परेशानी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है जिससे आध्यात्मिक गुण, योग साधना में अपनी सफलता प्राप्त करते हैं।

ऐमेथिस्ट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। ऐमेथिस्ट रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त काल से एक घंटे के अंदर अंगूठी को धारण कर लेना चाहिए। ऐमेथिस्ट को यदि रविवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ऐमेथिस्ट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले या नीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सवा

मीटर काले कपड़े का दान करें तो ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सेवकों या अधीनस्थ कर्मचारियों व जमादार को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव महाराज की उपासना करें तथा शनिदेवजी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

कुंभ लग्न वाले जातक यदि ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता है। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की

गहराई में जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता है। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते हैं, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता है। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता है। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता है।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा है। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती है। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते हैं।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 4, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती

हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।
क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए
आवश्यक हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090 21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/10/2097-02/05/2098 20/06/2098-26/12/2099 17/03/2100-16/09/2100	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2108-29/07/2108 23/11/2108-17/02/2111	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
सम
अशुभ
सम

क्षेत्र

सुख
सन्तति
शत्रु से कष्ट
दुर्घटना से बचाव
कम खर्च



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराक्रमी एवं उत्साही व्यक्ति हैं अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराक्रम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव का स्वामी नीच का होकर अष्टम भाव में स्थित है ।
- नवम भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ

आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवक्ता, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी,



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

कन्या राशि में शुक हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सटटे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुःखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलवान एवं चंचल होते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग इनसे प्रभावित रहते हैं। ये स्वभाव से प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारों के व्यक्ति होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही स्वीकार करते हैं। अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम एवं सहानुभूति का भाव विद्यमान रहता है तथा धार्मिकता के भाव की न्यूनता रहती है तथा आधुनिकता से परिपूर्ण रहते हैं। साहित्य एवं कला में रुचि के साथ साथ ये उत्तम श्रेणी के वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टि कोण विशाल होता है तथा इनके हृदय में मानव जाति के प्रति किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहता है। अध्ययन के प्रति ये रुचिशील रहते हैं तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक सम्मान एवं आदर प्राप्त करते हैं। अवसरानुकूल ये नेतृत्व को प्राप्त करने में भी समर्थ हो जाते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा अपने महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धि के द्वारा ही सम्पन्न करते हैं। अतः धनैश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके आनंद पूर्वक इसका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे परन्तु मन में स्थिरता कम ही होगी। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपकी दृष्टि सूक्ष्म होगी अतः अन्य जनों को प्रभावित करके आप उनके विषय में पूर्ण ज्ञान अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त आप परिश्रम पूर्वक धनार्जन करेंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ होंगे।

लग्न में राहु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं। लेखन कार्य में आपकी रुचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप किसी विशिष्ट उपलब्धि को अर्जित करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप सामान्यतया कम बोलना पसंद करेंगे तथा कम से कम शब्दों में वाणी द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति करेंगे।

आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके आयस्रोतों की संख्या एक से अधिक हो सकती है। साथ ही ऐश्वर्य एवं वैभव से भी सुसम्पन्न रहेंगे तथा भौतिक उपकरणों को अर्जित करके सपरिवार सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इससे आपके सामाजिक स्तर में वृद्धि होगी तथा एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपका सम्मान रहेगा।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा अवश्य रहेगी परन्तु धार्मिक कार्य कलापों एवं अनुष्ठानों को सम्पन्न करने में उपेक्षा का भाव रखेंगे। लेकिन बन्धु एवं मित्र वर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। इस प्रकार आप पराक्रमी बुद्धिमान एवं परिश्रमी पुरुष होंगे तथा आनंद पूर्वक सुखोपभोग करते हुए



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अपना जीवन व्यतीत करेंगे ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप दार्शनिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा स्वप्न दृष्टा प्रवृत्ति भी होगी। आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा अपनी वाणी को स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कहेंगे। साथ ही आप अत्यंत ही उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के प्रति आप पूर्ण सचेष्ट रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र होगा तथा अजनबी व्यक्ति भी प्रथम मुलाकात में ही आपसे प्रभावित होकर आपका मित्र बनने के लिए उत्सुक हो जाएगा। अपने विचारों को व्यक्त करते समय आप श्रोताओं की इच्छा के अनुसार ही अपने वक्तव्य को नया स्वरूप प्रदान करने की क्षमता रखेंगे जिससे लोग आपसे अत्यंत ही प्रभावित रहेंगे परन्तु यदा कदा आप में आत्म विश्वास की अल्पता होगी।

पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि आप की अच्छी रहेगी तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप अपने विचारों को समय समय पर परिवर्तित करते रहेंगे इसका मूल उद्देश्य पारिवारिक जनों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करना रहेगा। आपको सुन्दर एवं स्वादिष्ट भोजन अच्छा लगेगा परन्तु मीठा एवं नमकीन स्वाद आपके विशेष प्रिय रहेंगे। सामान्यतया आपके स्वाद अन्य जनों से भिन्न रहेंगे। आपकी वाणी में भी मधुरता रहेगी तथा अन्य जन आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे साथ ही प्रकृतिक दृष्टियों का अवलोकन करना आपको प्रिय लगेगा। जमीन, जायदाद, वाहन तथा बहुमूल्य द्रव्यों का भी आप अर्जित करेंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त अचानक धन प्राप्ति एवं माता पिता की पैतृक सम्पत्ति से भी आप धन वान होंगे तथा सुखपूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आवश्यक सांसारिक सुखों से युक्त होंगे तथा आधुनिक सुख-संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी सम्पन्न होंगे एवं जीवन में उनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक समृद्धिशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में भी स्तर उन्नत होगा।

सामान्यतया जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी इसके स्वामित्व को प्राप्त करके आप श्रेष्ठता के भाव की अनुभूति करेंगे। किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपके नाम हो सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य में अभि वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से भी आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा परंतु विवाद युक्त सम्पत्ति से दूर ही रहना चाहिए।

आपका आवास सामान्यतया अच्छा होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप नित्य तत्पर होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सज्जन होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख की प्राप्ति होगी तथा युवावस्था से ही आप वाहन का उपयोग करना प्रारंभ करेंगे जिससे आपको प्रसन्नता की अनुभूति होगी।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी पारिवारिक जनों का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी फलतः सभी सदस्य उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप दोनों एक दूसरे के लिए सहयोगी सिद्ध होंगे तथा सुख-दुःख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे परंतु परस्पर मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है। अतः यदि आप परस्पर सामंजस्य बनाए रखें तो संबंधों में मधुरता आ सकती है। साथ ही माता से आपको अवसरानुकूल नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति भी होती रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको परिश्रम करना पड़ेगा तभी वांछित सफलताएं मिल सकती हैं। स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में भी आत्मविश्वास एवं परिश्रम के भाव का प्रदर्शन करना पड़ेगा लेकिन यदि आप स्नातक परीक्षा की अपेक्षा किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा आदि करें तो इससे आपके आसानी से सफलता मिलेगी तथा अपने भविष्य का निर्माण करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। तथा चन्द्रमा भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने महत्वपूर्ण कार्य-कलापों को सम्पन्न करके उनमें वांछित उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी तथा इससे आप अवसरानुकूल इच्छित लाभ एवं सफलता अर्जित करेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान शीघ्र एवं सुगमता से करने में भी समर्थ होंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी रुचि एवं श्रद्धा होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। आपकी आधुनिक साहित्य कविता एवं संगीत के प्रति भी रुचि होगी एवं इस क्षेत्र में कुछ विशिष्ट कार्य करने में समर्थ होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी काफी रुचि होगी तथा इनमें भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। इसमें यदा-कदा आप भावुकता का भी प्रदर्शन करेंगे। आपका प्रेम मर्यादा एवं नैतिकता के अन्तर्गत होगा तथा इसमें आप यत्नपूर्वक यथार्थवादी दृष्टि कोण अपनाएंगे। जिससे आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका जीवन सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा।

संतति भाव में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा कन्या संतति की अधिकता रहेगी। आपके बच्चे सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, विब्रम एवं प्रतिभाशाली होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन करने में सर्वदा तत्पर होंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे आपसी सदभाव, सहयोग एवं सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी।

पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान माता के माध्यम से ही करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली व्यक्ति माने जायेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारम्भ से ही वे शिक्षा में इच्छित उपलब्धियां अर्जित करेंगे। आप भी अपनी ओर से उन्हें उच्च शिक्षा प्रदान करेंगे तथा किसी भी प्रकार से कमी नहीं होने देंगे। बच्चे भी आपकी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त वे स्वभाव के विब्रम, व्यवहार कुशल एवं उत्तम कार्य कलापों को करने वाले होंगे जिससे अन्य सामाजिक लोग भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। इससे आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा केतु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया सिंह राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं स्वाभिमानी होता है। केतु के प्रभाव से वह उग्र सांसारिक कार्यों में दक्ष एवं कर्तव्य परायणता के भाव से युक्त रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी। लेकिन सांसारिक कार्य कलापों में वह दक्ष होंगी तथा साहस एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी। केतु के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपकी पत्नी लालिमा लिए सुंदर एवं गौर वर्ण की महिला होंगी एवं उनका कद भी उन्नत होगा शारीरिक संरचना उनकी पतली रहेगी परन्तु अन्य शरीर के अंगों में पुष्टता एवं सुडौलता बनी रहेगी इससे उनके सौन्दर्य में निखार आएगा एवं व्यक्तित्व भी आकर्षक बनेगा। साहित्य एवं कला में भी रुचि होगी तथा पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति लगाव होगा। भौतिकता के प्रति भी उनकी रुचि रहेगी तथा सांसारिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध आएंगे। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा या प्रेम विवाह की भी संभावना रहेगी। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी होगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में आकर्षण रहेगा साथ ही एक दूसरे की मनोभावों की भी कद्र करेंगे लेकिन पत्नी की उग्र प्रवृत्ति से यदा कदा आप अनावश्यक समस्याओं का सामना करेंगे। अतः ऐसे समय में संयम एवं धैर्य पूर्वक कार्य लेना चाहिए तभी अनुकूलता आ सकती है।

आपका विवाह किसी सामान्य परिवार में होगा तथा उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति मध्यम होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आप मधुर संबंध स्थापित करने के लिए यत्नशील होंगे तथा वे भी आपको यथोचित स्नेह प्रदान करेंगे एवं नैतिक सहयोग भी मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की विशेष सेवा भावना नहीं होगी तथा सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान नहीं रखेंगी। साथ ही देवर एवं ननद भी उनके उग्र स्वभाव एवं वाणी से अप्रसन्न रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार से सहयोग नहीं देंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं होगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। अतः जीवन में साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपकी जन्म कुंडली में जन्म समय में दशमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। वृश्चिक राशि जलतत्व युक्त राशि है अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया से युक्त होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी साथ ही कार्यक्षेत्र में आप समय समय पर परिवर्तन करने के भी इच्छुक रहेंगे तथा ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होगा जिससे आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र औषधि विज्ञान, डाक्टर, इंजीनियर, होटल प्रबंधक, या कर्मचारी, पुलिस सी आई डी, सेना, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, शस्त्र निर्माता तथा राजनीति का क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में आजीविका प्रारंभ करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में आपको अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही कार्य करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए शस्त्रों का व्यापार सुवर्ण आदि धातु कार्य विद्युत उपकरणों का क्रय विक्रय या निर्माण औषधि क्रय विक्रय या कैमिस्ट रासायनिक पदार्थ या होटल का स्वामित्व से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा इस में आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता के लिए उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार का आरंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको वांछित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे साथ ही समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त होगी। आप किसी सामाजिक संस्था या क्लब आदि के भी सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य हो सकते हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे जिससे सामाजिक जनों के मध्य वे आदरणीय होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्चस्तर पर शिक्षा का यत्नपूर्वक प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाएं। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा। आप भी एक योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता रहेगी। आप में आज्ञाकारिता का भाव भी विद्यमान होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि लग्न स्थान में रहेंगे व मीनस्थ राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि द्वितीय भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि पंचम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि छठे सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि पंचम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकती है, जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं, तो आप अपने साझेदार से संतुष्ट नहीं रहेंगे और आप को इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए अच्छा रहेगा।

14 मई के बाद आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। शेयर बाजार से अच्छा लाभ होगा। परन्तु राहु शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे। जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप बचत नहीं कर पाएंगे। बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें।

14 मई के बाद धनागम में निरन्तरता बढ़ जाएगी जिससे कर्जें इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य में धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में कुछ विशम परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं जिसके फलस्वरूप आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य में आपकी अहम भूमिका होगी। सामाजिक रूप से यह वर्ष सामान्यतः उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे, परन्तु 14 मई से गुरुग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा।

यह समय गर्भधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा। नैसर्गिक रूप से शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो उसका विवाह संस्कार भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीय स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव भी आपके शरीर पर पड़ेगा। 29 मार्च के बाद शनि ग्रह का गोचर भी द्वितीय स्थान में हो रहा है। उस समय के अंतराल में आप अचानक रोग ग्रस्त हो सकते हैं।

गुरुग्रह के गोचर के बाद आपका समय काफी अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए इस वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः संघर्षात्मक परिस्थितियों में आपको सफलता मिलेगी।

अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। विद्यार्थियों के लिए 14 मई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपको सफलता प्राप्त होगी। नौकरी के लिए कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि से विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। 14 मई के बाद लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा, मन्त्र पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 14 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति

श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं और नित्य प्रति हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को राटी में गुड़ डालकर खिलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में द्वादश में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। अतः इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहे हैं। अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। आपके उच्चाधिकारी आपको परेशान भी कर सकते हैं, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

02 जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे। जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी पर भी आपका धन खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। उस समय आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए यह समय ज्यादा खराब है। 31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट मित्र, छोटे भाईयों व जीवनसाथी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। समाज में आप का मान-सम्मान और बढ़ेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

02 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है, जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। कभी कभी स्वास्थ्य अनुकूल रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होगा।

02 जून बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरुजल तत्व राशि में होने के कारण कफ, खांसीया पेट से संबंधित रोग हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशमिल जाएगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को कुछ और दिन इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। धार्मिक यात्राओं के भी योग बन रहे हैं।

02 जूनके बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा

करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप या तन्त्र साधना के प्रति आपकी विशेष रुचि बनी रहेगी और दान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करे एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें। अन्न दान या पीली वस्तु का दान करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वादश भाव में रहेंगे। वक्रीगुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लगातार प्रयास करने के बावजूद भी व्यापार में सफलता की उम्मीद कम ही रहेगी। शनि, राहु व गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रु आपके कार्यों में रुकावटें डाल जा सकते हैं। बड़े अधिकारी या वरिष्ठ लोगों का भी सहयोग नहीं मिलेगा। आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। उच्च अधिकारियों द्वारा आपको प्रताड़ित भी किया जा सकता है।

जून के बाद समय अनुकूल हो रहा है। मित्र या पत्नी के सहयोग से लाभ प्राप्त होगा। किसी के साथ मिल कर कोई कार्य कर सकते हैं, जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। 26 नवम्बर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो ज्यादा नुकसान हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत से ही धनागम के सारे स्रोत प्रभावित होंगे। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिसमें पहले से संचित किया हुआ धन भी खर्च हो सकता है जिसके फलस्वरूप आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। बीमारी दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी आय के मार्ग खोल सकती है। आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में आपकी पत्नी एवं भाईयों का भी मुख्य सहयोग होगा। 26 नवम्बर के बाद फिर से समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको अपने अनावश्यक खर्च पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी हो सकती है। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें। आपको मातुल पक्ष का भी सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण होगा, जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। तृतीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से समाज में आपका मान-सम्मान और अधिक बढ़ेगा। भाइयों का भरपूर सहयोग मिलेगा। वर्ष का अंतिम माह अधिक शुभ नहीं रहेगा।

संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

जून के बाद आपके बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिल सकता है। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है, परन्तु वर्ष का अंतिम माह शुभ नहीं रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लग्न स्थान का पाप कर्तरी योग में होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह समय आपको अधिक प्रभावित कर सकता है ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा नहीं तो परेशानी बढ़ सकती है।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है जिसके प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

जून के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग

लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है। यदि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें भी आपको सफलता मिलेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

जून के बाद तृतीय स्थान पर शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी होगी। यात्रा करते समय पूर्ण सावधानी बरतें, क्योंकि मुख्य ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। चाह कर भी आप धार्मिक कार्य नहीं कर पाएंगे। अधिक आलस्य के कारण भी आपकी नित्य क्रिया प्रभावित हो सकती है। जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन राहु का दान करें और प्रत्येक दिन राहु मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान का शनि आपके कार्य-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा। फरवरी के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। कम समय में बेहतर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आप अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योंकि एकादश स्थान का राहु अचानक लाभ कराता रहेगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। फरवरी से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है। 24 मई के बाद एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराने के प्रबल योग बना रहे हैं।

24 जुलाई के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। बच्चे या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। अतः अच्छा यही होगा की विपरीत स्थिति में आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं। फरवरी के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे एवं परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप बहुत जल्दी अच्छे हो जाएंगे। सुबह सुबह व्यायाम अथवा योगा करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। फरवरी से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत बढ़िया रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपके विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 23 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। व्यावसायिक व्यक्ति की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। फरवरी के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नति के साथ होगा। समय समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ मिलता रहेगा। आप कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। आप अपने दैनिक कार्य स्फूर्ति से करेंगे और अपने कार्यक्षेत्र कुछ विशेष करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। एकादश स्थान का राहु अचानक धन लाभ करा सकता है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे।

29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आप पर कुछ अनावश्यक खर्च आ सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। शनि ग्रह के गोचर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाई-बहनों के लिए समय बहुत उपयुक्त है तथा उनकी उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। बच्चों की उन्नति के भी योग हैं।

05 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक माहौल खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना लेंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य

भी प्रभावित हो सकता है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के बारे में शुभ समाचार मिलेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। मार्च के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपको उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करनी चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक विकसित होगी। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

08 अगस्त के बाद शनि का गोचर प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें। सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप उन्नति करेंगे परन्तु करियर में सफलता पाने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। गुरु के गोचर के बाद समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहता है उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। उन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वालों के स्थानान्तरण होगा। यह

परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। 25 अगस्त से आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। 25 अगस्त के बाद गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबों की सहायता करें।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(13/10/2025 - 14/05/2039)

आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा 13/10/2025 को आरम्भ तथा 14/05/2039 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है। गुरु आपकी जन्मकुण्डली में पाँचवें भाव में स्थित है। पाँचवां भाव संतान, आनन्द, आमोद-प्रमोद, रोमांस, वर्ग-पहेली जैसी प्रतियोगी स्पर्धाओं, लॉटरी, प्रेम-संबंध, अच्छी या बुरी मानसिकता, धार्मिक बौद्धिकता, उच्च शिक्षा तथा सत्ता, विशाल संपत्ति आदि का भाव है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है। पाँचवें भाव में स्थित यह आपकी कुण्डली के 9वें, 11वें तथा पहले भाव को प्रभावित करता है। 16 साल की यह अवधि आपके लिए शान्तिपूर्ण, समृद्धिदायक तथा कल्याणकारी होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु पाँचवें भाव में स्थित है। यह एक त्रिकोण है। गुरु का प्रभाव प्रथम भाव (9वें तथा 11वें के अतिरिक्त) पर है जो व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत मामलों के भाव के साथ-साथ एक त्रिकोण और केन्द्र भी है। फलतः आपकी शत्रुओं से रक्षा होगी। किसी बड़ी दुर्घटना की सम्भावना नहीं है। आप अपने कर्तव्य का पालन करते हुए एक सामान्य जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

गुरु पाँचवें भाव में स्थित है जो प्रतिस्पर्धा तथा विशाल सम्पत्ति का भाव है। अतः आपको अपनी संपत्ति तथा वित्त को बढ़ाने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप अत्यन्त ही बुद्धिमान रहेंगे और तर्कशास्त्र तथा कानून में अभिरुचि रहेगी। नौकरी में आपकी पदोन्नति होगी तथा धनोपार्जन का अवसर मिलेगा।

व्यवसाय के प्रति आपके दिमाग में नई-नई योजनाएँ आएंगी जिनके क्रियान्वित होने पर आपको स्रोत तथा वित्त बढ़ाने का अवसर मिलेगा और समाज का सहयोग प्राप्त होगा। गुरु के 11वें भाव पर, (9वें तथा पहले भाव के अतिरिक्त) जो आय का भाव है, प्रभाव के फलस्वरूप आपकी आय में वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु का संबंध दोनों त्रिकोणों के साथ, पाँचवें में स्थित होने तथा 9वें एवं पहले (जो एक त्रिकोण और केंद्र भी है) पर दृष्टि होने से आपका पारिवारिक जीवन काफी उत्साहपूर्ण तथा खुशहाल होगा। आपके जीवनसाथी सहयोगी तथा सहायक होंगे। आपके बच्चे अत्यन्त आज्ञाकारी होंगे। आपका पारिवारिक जीवन अच्छा होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा। पंचम तथा नवम भाव से सम्बद्ध गुरु के कारण इस दशा में अहंकारी होंगे, किन्तु अपनी शिक्षा जारी रखेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(13/10/2025 - 13/10/2025)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/10/2025 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 13/10/2025 को प्रारंभ होकर 13/10/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको संतान से खुशी मिलेगी। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। घर में मांगलिक उत्सव हो सकते हैं। सलाहकार के पद पर कार्य कर सकते हैं। समृद्धि का समय है, पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। भौतिक प्रगति के बहुत से अवसर आएंगे। उच्चशिक्षा उत्तम होगी या शिक्षा पूर्ण हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा, प्रभावशाली मित्र होंगे, सफलता और समृद्धि का योग है। आपके पिता धनी और सौभाग्यशाली रहेंगे। माता धनी होंगी ; कार्यो में सफल रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए लाभ, उत्कृष्ट समय और साझेदारी से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान को कार्यो में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है; अप्रत्याशित घटना घट सकती है। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा; परिवर्तन हो सकता है। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र की देखभाल करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शनि
(13/10/2025 - 13/01/2028)**

आपकी बृहस्पति की महादशा 13/10/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 13/10/2025 को प्रारंभ होकर 13/01/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी आय बढ़ेगी। स्वयं के परिश्रम से धन कमाएंगे। सुख-साधन उपलब्ध होंगे, मगर कुछ देर लग सकती है। कटु शब्द बोलने से बचें क्योंकि इससे परिवार की शांति भंग हो सकती है। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। सफलता प्राप्त करने के लिए बाधाएं पार करनी होंगी। कार्यो के लिए प्रशंसा होगी। बड़े भाई-बहनों और चाचा से संबंध मधुर रहेंगे। आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। वसीयत या साझेदारी से लाभ हो सकता है।

आपके पिता को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। माता का धनार्जन उत्तम होगा।

अगर वे कार्यरत हैं तो प्रोन्नति होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, यात्राएं होंगी। परामर्शदाता सफल होंगे। व्यापारियों के कार्य में अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, परिवर्तन संभव है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों और दांतों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की भैरव रूप में पूजा करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - बुध
(13/01/2028 - 20/04/2030)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/10/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 13/01/2028 को प्रारंभ होकर 20/04/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाजिरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपकी ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। लेखन, प्रकाशन, अध्यापन के लिए समय उत्तम है। उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। शिक्षा से संबंधित यात्रा हो सकती है। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। विज्ञान, गणित और ज्योतिष में महारत हासिल कर सकते हैं। धर्मशास्त्रों का अध्ययन कर सकते हैं। महत्वपूर्ण फैसले कर सकते हैं। उत्तम प्रशासनिक क्षमता और बुद्धिमानी के कारण धनार्जन उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं होंगी: उपयुक्त नियोजन और साधनों के सुप्रबंधन द्वारा धनलाभ होगा। आपके पिता को परिश्रम से लाभ होगा। माता को मानसिक और घरेलू सुख मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए विवाह, व्यापार से लाभ या उसका विस्तार, शिशु का जन्म, उत्तम मित्र और विशिष्ट उपलब्धियों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश और शेयरों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी सहयोग करेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनलाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को विचार-विनिमय और जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गठिया आदि की मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की उपासना करें।